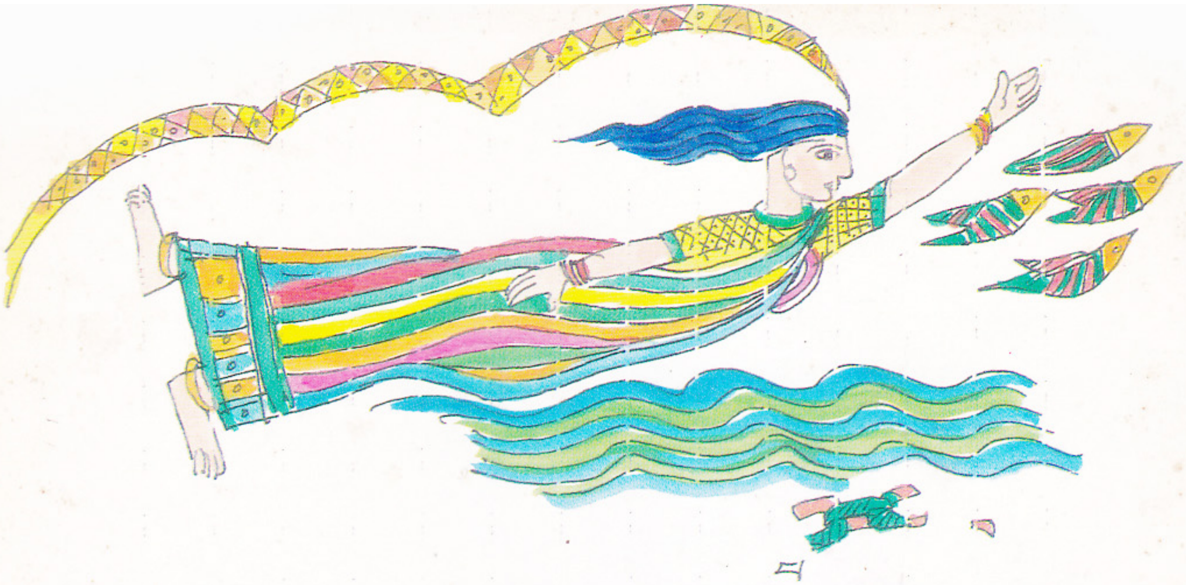
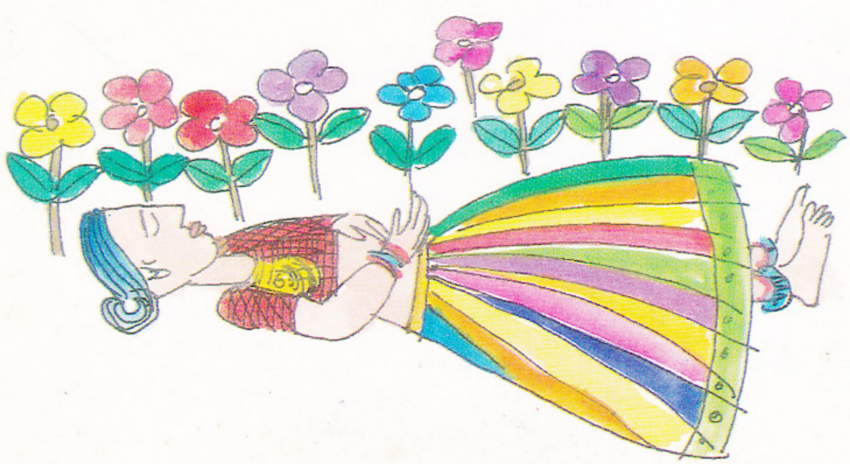


औरतें अगर चाहें तो

(कुछ कविताएँ औरतों के लिए)





प्रस्तुति : कात्यायनी

रेखांकन : राम बाबू

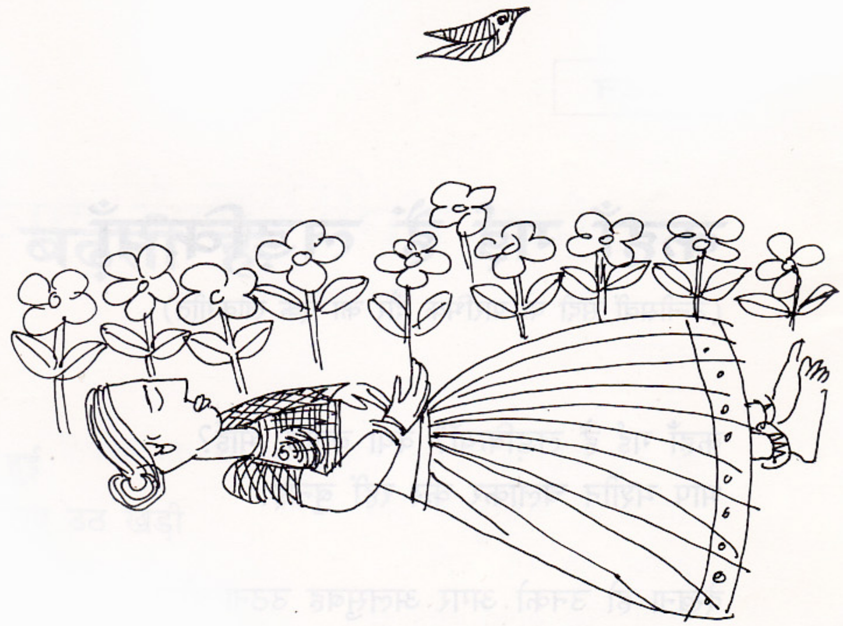
औरतें अगर चाहें तो

प्रस्तुति : कात्यायनी
रेखांकन : राम बाबू

पुस्तकालय संस्करण
प्रकाशन वर्ष : मई 1998

मूल्य : 25 रुपये

प्रकाशक : साउथ एशियन नेटवर्क फॉर आल्टरनेटिव मीडिया (**सनम**),
249-ई, रामा मार्केट, मुनीरका गाँव,
नई दिल्ली 110 067



कविता क्रम

ब्रिटेन

कहाँ गई हैं लड़कियाँ

(उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक दौर का एक लोकगीत)

कहाँ गई हैं लड़कियाँ? क्या बताऊँ भाई?
भाप मशीन चलाकर कर रहीं बुनाई।

देखना हो उनको अगर अलसुबह उठना होगा।
पौ फटते ही फैक्टरी तक पैदल चलना होगा।



आयरलैण्ड

धीरे धीरे आगे बढ़ती है

जेम्स कोनाली

अपनी देह और आत्मा में जकड़ी हुई
सदियों की बेड़ियों को तोड़ने के लिए उठ खड़ी
उन औरतों का प्रयास
आजादी की दिशा में बढ़ा हुआ कदम है
मजदूर वर्ग को अवश्य ही देना चाहिए साधुवाद
और जोरदार होनी चाहिए उनकी वाहवाही
अगर दासता के खिलाफ उनकी नफरत और उमंग
आजादी की ओर बढ़ती है धीरे धीरे
औरतों की सेना
लड़ाकू मजदूरों की सेना के आगे आगे।

(1915)



फ्रांस

जो पैदा होंगी हमारे बाद

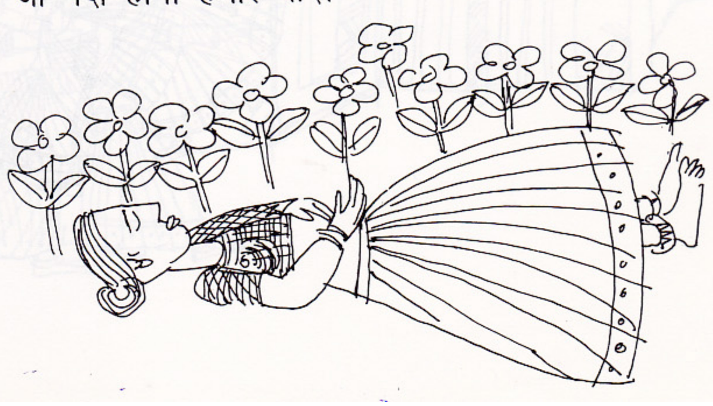
अज्ञात

यह मत कहो बहनो कि तुम कुछ नहीं कर सकतीं
आस्था की कमी अब और नहीं
हिचक अब और नहीं
आओ, पूछें अपने आप से
क्या चाहते हैं हम?

पूर्ण मुक्ति चाहिए, नहीं चाहते कम,
उड़ाने दो माखौल उन्हें, रुक जाएगी हँसी एक दिन
वे दिन क्या दूर हैं?
क्या फर्क पड़ता है उससे!



संघर्षों में झेलनी हैं दिक्कतें और तकलीफें हमें
सुख उन बहनों के लिए होगा, जो पैदा होंगी हमारे बाद।



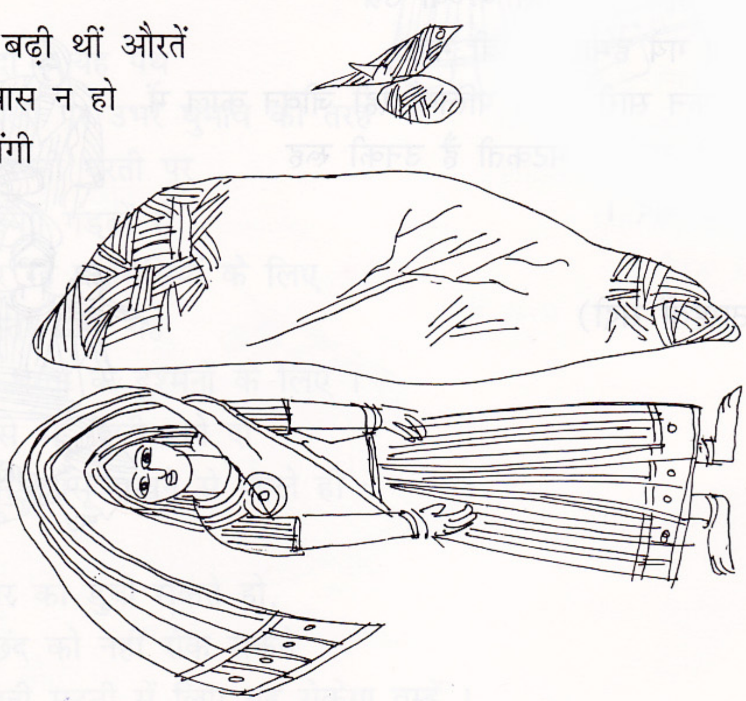
जापान

सोई हुई औरतें आगे बढ़ेंगी

ओसानो आकिको

दिन आ रहे हैं पर्वत हटाने के
ऐसा कहती हूँ, शक होता है दूसरों को
अर्से से पर्वत महज सो रहे हैं
अतीत में

आग से गुजरती हुई आगे बढ़ी थीं औरतें
फिर भी तुम्हें शायद विश्वास न हो
सोयी हुई सभी औरतें जागेंगी
और अब आगे बढ़ेंगी।



वियतनाम

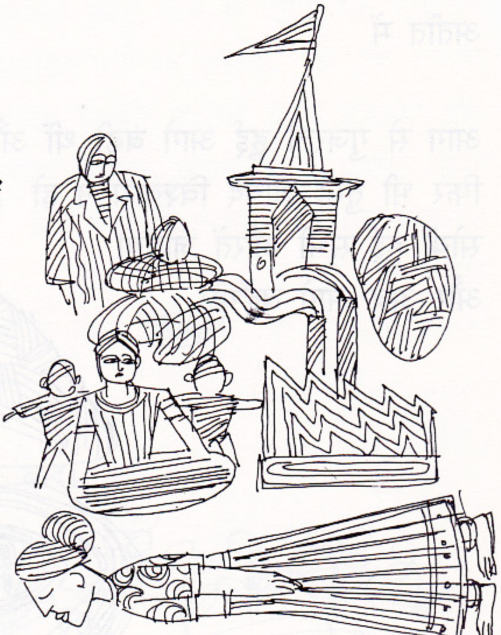
औरत की नियति

क्यू

कितनी कारुणिक है औरत की नियति,
कितना दुखद है उनका भाग्य,
हे सृष्टिकर्ता, हमलोगों पर तुम इतने निर्दय क्यों हो ?

बरबाद हो गयी हमारी कच्ची उम्र
कुम्हला गये हमारे गुलाबी गाल
यहाँ दफन सारी औरतें पत्नियाँ रहीं जीवन काल में
फिर भी अकेली भटकती है उनकी रूह
मरने के बाद ।

(अठारहवीं सदी)



वियतनाम



छापामार औरतें

तो हू

सड़क से छोटी है रात
और छोटी गली से पेचीदा है यह पथ
मेरी नन्हीं बच्ची की हथेली पर उभरे घुमाव की तरह
फिर भी मैं इस धरती, अपनी धरती पर
खाई खोदकर, जख्म करूँगी गड्ढों से
इस रास्ते से कवायद कर रहे फ्रांसिसियों के लिए
सोने के लिए उनका बिस्तर होगा यह
धरती पर बाग होगा इस धरती के दुश्मनों के लिए ।
खाइयों को मेरी नफरत से भी गहरी होने दो
पूरा होना है यह काम मेरे आँसू सूखने से पहले ही . . .

तुम मेरी बच्ची की पुकार को डुबो सकते हो,
मगर मेरे नंगे हाथों के छंद को नहीं रोक सकते
जमे हुए कीचड़ को अपनी मुट्ठी में लिए यह रोकेगा तुम्हें ।

चीन

मिलिशिया की स्त्रियाँ

(एक फोटो पर लिखी गई लाइनें)

माओ त्से-तुङ

दिख रही हैं वे
किस तरह दमकती हुई,
किस कदर बहादुरी से लबरेज
कंधे पर टाँगे हुए
पाँच फुट की राइफलें
सुबह की पहली रोशनी से नहाये हुए
परेड के मैदान में ।
चीन की बेटियों के हृदय में
पल रही हैं ऊँची आकांक्षाएँ ।
रेशम-साटन से नहीं,
प्यार वे करती हैं
अपनी युद्ध की साज सज्जा से ।

(1961)





लहर

मर्जिएह ओस्कोई

मैं हुआ करती थी एक ठंडी
पतली धारा
बहती हुई जंगलों,
पर्वतों और वादियों में
मैंने जाना कि
ठहरा हुआ पानी भीतर से मर जाता है
मैंने जाना कि
समुद्र की लहरों में मिलना
नन्हीं धाराओं को नयी जिन्दगी देना है
न तो लम्बा रास्ता, न तो अंधेरे खड्ड
न रुक जाने का लालच
रोक सके मुझे बहते जाने से
अब मैं जा मिली हूँ अंतहीन लहरों से
संघर्ष में मेरा अस्तित्व है
और मेरा आराम है–मेरी मौत

ईरान

मैं एक औरत

मर्जिएह ओस्कोई



मैं एक माँ,
एक बहन,
एक बेटी,
एक अच्छी पत्नी,
एक औरत हूँ ।
एक औरत जो न जाने कब से
नंगे पाँव रेगिस्तानों की धधकती बालू में
भागती रही है ।
मैं सुदूर उत्तर के गाँवों से आई हूँ।
एक औरत जो न जाने कब से
धान के खेतों और चाय के बगानों में
अपनी ताकत से ज्यादा मेहनत करती है ।
मैं पूरब के अंधेरे खण्डहरों से आई हूँ
जहाँ मैंने न जाने कब से
नंगे पाँव
सुबह से शाम तक
अपनी मरियल गाय के साथ, खलिहानों में
दर्द का बोझ उठाया है ।
मैं एक औरत हूँ

उन बंजारों में से
जो तमाम दुनिया में भटकते फिरते हैं
एक औरत जो पहाड़ों की गोद में बच्चे जनती है
जिसकी बकरी मैदानों में कहीं मर जाती है
और वह बैन करती रह जाती है ।
मैं एक मजदूर औरत हूँ
जो अपने हाथों से फैक्टरी में
भीमकाय मशीनों के चक्के घुमाती है
वे मशीनें जो उसकी ताकत को
ऐन उसकी आँखों के सामने
हर दिन नोंचा करती हैं
एक औरत जिसके खूने जिगर से
खूंखार कंकालों की प्यास बुझती है,
एक औरत जिसका खून बहने से
सरमायेदार का मुनाफा बढ़ता है ।
एक औरत जिसके लिए तुम्हारी बेहूदा शब्दावली में
एक शब्द भी ऐसा नहीं
जो उसके महत्व का बयान कर सके
तुम्हारी शब्दावली केवल उसी औरत की बात करती है
जिसके हाथ साफ हैं
जिसका शरीर नर्म है
जिसकी त्वचा मुलायम है
और जिसके बाल खुशबूदार हैं ।
मैं तो वह औरत हूँ



जिसके हाथों को दर्द की पैनी छुरियों ने
घायल कर दिया है,
एक औरत जिसका बदन तुम्हारे अंतहीन
शर्मनाक और कमरतोड़ काम से टूट चुका है ।
एक औरत जिसकी खाल में
रेगिस्तानों की झलक दिखाई देती है
जिसके बालों से फैक्टरी के धुएँ की बदबू आती है।
मैं एक आजाद औरत हूँ
जो अपने कामरेडों भाइयों के
कंधे से कंधा मिलाकर
मैदान पार करती है,
एक औरत जिसने मजदूर के
मजबूत हाथों की रचना की है
और किसान की बलवान भुजाओं की ।
मैं खुद भी एक मजदूर हूँ
मैं खुद भी एक किसान हूँ
मेरा पूरा जिस्म दर्द की तस्वीर है
मेरी रग रग में नफरत की आग भरी है
और तुम कितनी बेशर्मी से कहते हो
कि मेरी भूख एक भ्रम है
और मेरा नंगापन एक ख्वाब !
एक औरत जिसके लिए तुम्हारी बेहूदा शब्दावली में
एक शब्द भी ऐसा नहीं
जो उसके महत्व का बयान कर सके ।



एक औरत जिसके सीने में
गुस्से से फफकते नासूरों से भरा
एक दिल छिपा है ।
एक औरत जिसकी आँखों में
आजादी की आग के लाल साये
लहरा रहे हैं ।
एक औरत जिसके हाथ
काम करते करते सीख गये हैं कि
लाल झण्डा कैसे उठाया जाता है ।

फिलिस्तीन

मेरे क्रोध की लपटें

एक फिलिस्तीनी स्त्री

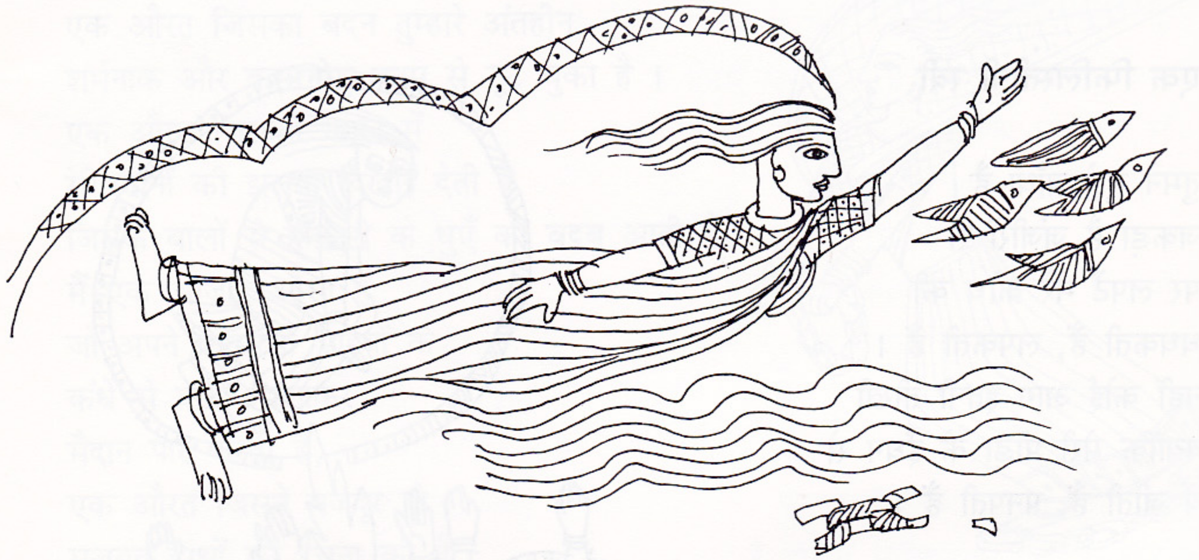


तुमने मुझे बाँधा है
जकड़ा है जंजीरों से
पर लपटें मेरे क्रोध की
धधकती हैं, लपकती हैं ।
नहीं कोई आग इतनी तीखी
क्योंकि मेरी पीड़ा के ईंधन से
ये जीती हैं, पनपती हैं ।

आग को ठंडाने के लिए
हँस सकती हूँ मैं भी
उन लोगों की ताकत पर
हैं नहीं जो इंसान
कहलाने के काबिल भी ।

शरीर बाँध सकते हो
चेनों से, जंजीरों से
शब्दों को बन्दी
बनाना नहीं मुमकिन
वो तो उड़ जाएँगे
मुक्त पंछियों से ।

(अनुवाद : वीणा शिवपुरी)



जीवित हूँ तो लड़ूँगी

अज्ञात

मैं एक औरत हूँ
अगर जीवित हूँ तो लड़ूँगी
और अगर लड़ूँगी
तो सब औरतों की मुक्ति में योगदान दूँगी ।
निराशा की काली रात में भी
विजय जन्म लेती है ।

सुनो करीब आकर

अज्ञात

तुम यदि मुझे
सच में समझना
चाहते हो
तो करीब से वह सब सुनो
जो मुझे कहने की
इजाजत नहीं है।



औरतें अगर चाहें तो . . . . .

अज्ञात

ईश्वर ने जो पहली औरत बनाई थी
वह इतनी सशक्त थी
कि उसने अकेले ही संसार को उलट दिया था ।
ये सब औरतें मिलकर जरूर उसे वापिस पलट सकती हैं ।
आज जब औरतें यह करना चाहती हैं
तो बेहतर यही है कि पुरुष उन्हें करने दें
जिससे उसका सही पहलू ऊपर आ जाए ।

